अलंकार

Dr. Kamraj Sindhu
Assistant Professor (Hindi)
Directorate of Distance Education
Kurukshetra University, Kurukshetra

DDE Programme
B.A. General
Class:
B.A. Part -3rd

Subject:
Hindi

- **अलंकार** अलंकृति ; अलंकार : अलम् अर्थात् भूषण। जो भूषित करे वह अलंकार है। कहा ।*भारतीय साहित्य में __अनुप्रास__, उपमा, रूपक, अनन्वय, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, संदेह, अतिशयोक्ति, वक्रोक्ति आदि प्रमुख अलंकार* हैं।
- इस कारण व्युत्पत्ति से उपमा आदि अलंकार कहलाते हैं। उपमा आदि के लिए अलंकार शब्द का संकुचित अर्थ में प्रयोग किया गया है। व्यापक रूप में सौंदर्य मात्र को अलंकार कहते हैं और उसी से काव्य ग्रहण किया जाता है। (काव्यं ग्राह्ममलंकारात्। सौंदर्यमलंकार: - __वामन__)। चारुत्व को भी अलंकार कहते हैं। (टीका, व्यक्तिविवेक)। __भामह__ के विचार से वक्रार्थविजाएक शब्दोक्ति अथवा शब्दार्थवैचित्र्य का नाम अलंकार है

- दंडी के लिए अलंकार काव्य के शोभाकर धर्म हैं (काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते)। सौंदर्य, चारुत्व, काव्यशोभाकर धर्म इन तीन रूपों में अलंकार शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है और शेष में शब्द तथा अर्थ के अनुप्रासोपमादि अलंकारों के संकुचित अर्थ में। एक में अलंकार काव्य के प्राणभूत तत्व के रूप में ग्रहीत हैं और दूसरे में सुसज्जितकर्ता के रूप में।

विभाजन

उपमा अलंकार

अतिशयोक्ति अलंकार

विभावना अलंकार

- सामान्यत: कथनीय वस्तु को अच्छे से अच्छे रूप में अभिव्यक्ति देने के विचार से अलंकार प्रयुक्त होते हैं। इनके दवारा या तो भावों को उत्कर्ष प्रदान किया जाता है या रूप, गुण, तथा क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराया जाता है। अत: मन का ओज ही अलंकारों का वास्तविक कारण है। रुचिभेद आएँबर और चमत्कारप्रिय व्यक्ति शब्दालंकारों का और भावुक व्यक्ति अर्थालंकारों का प्रयोग करता है। शब्दालंकारों के प्रयोग में पररुक्ति, प्रयत्नलाघव तथा उच्चारण या ध्वनिसाम्य मुख्य आधारभूत सिद्धांत माने जाते हैं और पुनरुक्ति को ही आवृत्ति कहकर इसके वर्ण, शब्द तथा पद के क्रम से तीन भेद माने जाते हैं, जिनमें क्रमश: अनुप्रास और छेक एवं यमक, पररुक्तावदाभास तथा लाटानुप्रास को ग्रहण किया जाता है। वृत्यनुप्रास प्रयत्नलाघव का उदाहरण है। वृत्तियों और रीतियों का आविष्कर इसी प्रयत्नलाघव के कारण होता है। श्रुत्यनुप्रास में ध्वनिसाम्य स्पष्ट है ही। इन प्रवृत्तियों के अतिरिक्त चित्रालंकारों की रचना में कौतूहलप्रियता, वक्रोक्ति, अन्योक्ति तथा विभावनादि अर्थालंकारों की रचना मं वैचित्र्य में आनंद मानने की वृत्ति कार्यरत रहती हैं।

- चार्यों ने काव्य शरीर, उसके नित्यधर्म तथा बहिरंग उपकारक का विचार करते हुए काव्य में अलंकार के स्थान और महत्व का व्याख्यान किया है। इस संबंध में इनका विचार, गुण, रस, ध्वनि तथा स्वयं के प्रसंग में किया जाता है। इस प्रकार के विचारों से अलंकारशास्त्र में दो पक्षों की नींव पड़ गई। एक पक्ष ने, जो रस को ही काव्य की आत्मा मानता है, अलंकारों को गौण मानकर उन्हें अस्थिरधर्म माना और दूसरे पक्ष ने उन्हें गुणों के स्थान पर नित्यधर्म स्वीकार कर लिया। काव्य के शरीर की कल्पना करके उनका निरूपण किया जाने लगा। आचार्य वामन ने व्यापक अर्थ को ग्रहण करते हुए संकीर्ण अर्थ की चर्चा के समय अलंकारों को काव्य का शोभाकार धर्म न मानकर उन्हें केवल गुणों में अतिशयता लानेवाला हेतु माना ।

- इन मतों के विरोध में 13वीं शती में जयदेव ने अलंकारों को काव्यधर्म के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए उन्हें अनिवार्य स्थान दिया है। जो व्यक्ति अग्नि में उष्णता न मानता हो, उसी की बुद्धिवाला व्यक्ति वह होगा जो काव्य में अलंकार न मानता हो। अलंकार काव्य के नित्यधर्म हैं (अंगीकरोति य: काव्यं शब्दार्थावनलंकृती। असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती ।-चंद्रालोक)।
- इस विवाद के रहते हुए भी आनंदवर्धन जैसे समन्वयवादियों ने अलंकारों का महत्व प्रतिपादित करते हुए उन्हें आंतर मानने में हिचक नहीं दिखाई है। रसों को अभिव्यंजना वाच्यविशेष से ही होती है और वाच्यविशेष के प्रतिपादक शब्दों से रसादि के प्रकाशक अलंकार, रूपक आदि भी वाच्यविशेष ही हैं, अतएव उन्हें अंतरंग रसादि ही मानना चाहिए।

- *विभाजन*
- अलंकार के मुख्यत: भेद माने जाते हैं--शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा उभयालंकार। शब्द के परिवृत्तिसह स्थलों में अर्थालंकार और शब्दों की परिवृत्ति न सहनेवाले स्थलों में शब्दालंकार की विशिष्टता रहने पर उभयालंकार होता है। अलंकारों की स्थिति दो रूपें में हो सकती है--केवल रूप और मिश्रित रूप। मिश्रण की द्विविधता के कारण "संकर" तथा "संसृष्टि" अलंकारों का उदय होता है। शब्दालंकारों में अनप्रास, यमक तथा वक्रोक्ति की प्रमुखता है। अर्थालंकारों की संख्या लगभग एक सौ पचीस तक पहुँच गई है।

- **विभावना अलंकार**
- जहाँ कारण के न होते हुए भी कार्य का होना पाया जाता है, वहाँ विभावना अलंकार होता है। उदाहरण -

- बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।
- कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
- आनन रहित सकल रस भोगी।
- धा बदन चन्द्र सो सुन्दर।

अतिशयोक्ति अलंकार

- अतिशयोक्ति = अतिशय + उक्ति = बढा-चढाकर कहना । जब किसी बात को बढ़ा चढ़ा कर बताया जाये
- हनुमान की पूँछ में, लग न पायी आग।
  लंका सारी जल गई, गए निशाचर भाग।।

अनुप्रास अलंकार

- अनुप्रास शब्द 'अन' तथा 'प्रास' शब्दों से मिलकर बना है। 'अन' शब्द का अर्थ है- बार- बार तथा 'प्रास' शब्द का अर्थ है- वर्ण।
- जिस जगह स्वर की समानता के बिना भी वर्णों की बार - बार आवृत्ति होती है, उस जगह अनुप्रास अलंकार होता है।
- इस अलंकार में एक ही वर्ण का बार -बार प्रयोग किया जाता है।उदाहरण
- जन रंजन मंजन दनुज मनुज रूप सुर भूप।

- **छेकानुप्रास**
- जहाँ स्वरूप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एक बार हो, वहाँ छेकानुप्रास होता है।
- जैसे
- रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै,
  साँसैं भरि आँसू भरि कहत दई दई।
- यहाँ 'रीझि-रीझि', 'रहसि-रहसि', 'हँसि-हँसि', और 'दई-दई' में छेकानुप्रास है, क्योंकि व्यजन वर्णों की आवृत्ति उसी क्रम और स्वरूप में हुई है।
- **लाटानुप्रास**
- जब एक शब्द या वाक्यखण्ड की आवृत्ति उसी अर्थ में हो, पर तात्पर्य या अन्वय में भेद हो, तो वहाँ 'लाटानुप्रास' होता है।
- जैसे
- तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी के पात्र समर्थ,
  तेगबबादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी थी जिनके अर्थ।
- इन दो पंक्तियों में शब्द प्रायः एक से हैं और अर्थ भी एक

- **यमक अलंकार**

  अलंकार, ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहन वारी, ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं।, **यमक अलंकार** है।

- **अर्थालंकार**

  जिस अलंकार में अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है। इसके प्रमुख भेद हैं।

- *उपमा अलंकार*

  जहाँ एक वस्तु या प्राणी की तुलना अत्यंत सादृश्य के कारण प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी से की जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के चार तत्व होते हैं-

- **उपमेय -** जिसकी उपमा दी जाए अर्थात जिसका वर्णन हो रहा है।

  उपमान - जिससे उपमा दी जाए।

  साधारण धर्म - उपमेय तथा उपमान में पाया जाने वाला परम्पर समान गुण।

  वाचक शब्द - उपमेय और उपमान में समानता प्रकट करने वाला शब्द जैसे- ज्यों, सम, सा, सी, तुल्य, नाई।

रूपक अलंकार

- जहाँ गुण की अत्यन्त समानता के कारण उपमेय में उपमान का अभेद आरोपन हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।
- जैसे
- मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।
- यहाँ चन्द्रमा (उपमेय) में खिलौना (उपमान) का आरोप होने से रूपक अलंकार होता है।

उत्प्रेक्षा अलंकार

- जहाँ समानता के कारण उपमेय में संभावना या कल्पना की जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। मानो, मनु, मनहु, जानो, जनु, जनहु आदि इसके बोधक शब्द हैं।
- जैसे
- कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
  हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए॥
- यहाँ उत्तरा के अश्रुपूर्ण नेत्रों (उपमेय) में ओस-कण युक्त पंकज (उपमान) की संभावना की गई है।

उपमेयोपमा अलंकार

- उपमेय और उपमान को परस्पर उपमान और उपमेय बनाने की प्रक्रिया को उपमेयोपमा कहते हैं।

अतिशयोक्ति अलंकार

- जहाँ उपमेय का वर्णन लोक सीमा से बढ़कर किया जाए वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।
- जैसे
- आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार। राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।
- यहाँ सोचने की क्रिया की पूर्ति होने से पहले ही

- **उल्लेख अलंकार**
- जहाँ एक वस्तु का वर्णन अनेक प्रकार से किया जाए, वहाँ उल्लेख अलंकार होता है।
- <u>जैसे</u>
- तू रूप है किरण में, सौन्दर्य है सुमन में,
  तू प्राण है किरण में, विस्तार है गगन में।

विरोधाभास अलंकार

- जहाँ विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास दिया जाए, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।
- <u>जैसे</u>
- बैन सुन्य जबतें मधुर,
  तबतें सुनत न बैन।
- यहाँ 'बैन सुन्य' और 'सुनत न बैन' में विरोध दिखाई पड़ता है जबकि दोनों में वास्तविक विरोध नहीं है।

दृष्टान्त अलंकार

- जहाँ उपमेय और उपमान तथा उनके साधारण धर्मों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव हो, दृष्टान्त अलंकार होता है।
- <u>जैसे</u>
- सुख-दुख के मधुर मिलन से यह जीवन हो परिपूरन।
  फिर घन में ओझल हो शशि, फिर शशि में ओझल हो घन।
- यहाँ सुख-दुख और शशि तथा घन में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव है।

- **रूपक अलंकार**
- ·जिस जगह उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाए, उस अलंकार को रूपक अलंकार कहा जाता है, यानी उपमेय और उपमान में कोई अन्तर न दिखाई पड़े।
- बीती विभावरी जाग री।
  अम्बर-पनघट में डुबों रही, तारा-घट उषा नागरी।
- यहाँ पर अम्बर में पनघट, तारा में घट तथा उषा में नागरी का अभेद कथन है।

Thanks

sindhukamraj@rediffmail.com

Kamrajsindhu.kuk@gmail.com